पढ़ना, अक्षर–मात्रा से आगे...

मीनू पालीवाल

शुरुआती पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में हमारा बोला और सुना हुआ भाषा का संसार काम आता है। कुछ शब्दों की पहचान के बाद बच्चे भाषा संरचना का यही आधार लेकर अपने पढ़ने का सफ़र शुरू करते हैं। भाषा एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में हमारे साथ चलती है और बच्चे उसका एक पूरा सन्दर्भ बनाकर पढ़ना सीख रहे होते हैं। ऐसे में शिक्षक की भूमिका एक सहयोगी की है, न कि मूल्यांकनकर्ता की। लेखिका मीनू पालीवाल ने अपने इस आलेख में कक्षा 2 और 3 के बच्चों के साथ कुछ लेखन नमूनों और उनके पढ़ने की प्रक्रिया का विश्लेषण करते हुए इस बात का विस्तृत अनुभव प्रस्तुत किया है। -सं.

ठीक से पढ़ो...

देखकर पढ़ो...

अरे 'म' लिखा है, 'ल' क्यों पढ़ रहे हो...

हाथ में आटा लिपट गया... 'लिपट गया' क्यों पढ़ रहे हो, 'चिपक गया' लिखा है...

'आ' और 'ग' को मिलाओ न... दोनों तो पहचान लिए तुमने, अब मिलाकर ही तो बोलना है...

'वीरता' लिखा है, 'वीरत' क्यों पढ़ रहे हो... 'आ' की मात्रा तो तुम जानते हो...

अरे, अक्षर-मात्रा जोड़कर बोलो न...

आज भी कई कक्षा अवलोकनों के दौरान ऐसे अनुभव होते हैं। यही नहीं, आसपास के अभिभावकों को देखती हूँ तो कई अभिभावक भी बच्चों के साथ इसी तर्ज़ पर काम करते हुए मिलते हैं।

मैं 36 वर्ष की हूँ। मेरी माँ जब पढ़ती थीं तब भी अक्षर-मात्रा जोड़कर पढ़ना सिखाया जाता था। जब मैं पढ़ती थी, तब भी वही और आज जब स्कूलों में जाती हूँ तब भी पढ़ना सिखाने का वही तरीक़ा प्रयोग में है। पढ़ना सिखाने की प्रक्रिया का इतने लम्बे समय तक एक-सी बने रहना मुझे एक ढाँचागत समस्या प्रतीत होती है।

इस तरीक़े का आधार है कि हमें बच्चों को सिखाना है। यदि हम अपनी सोच में यह बदलाव लाएँ कि हमें बच्चे की सीखने में मदद करनी है तो हमें कई ऐसी बातें नज़र आएँगी जो सिखाने वाले दृष्टिकोण में नज़र नहीं आतीं। मसलन, पहली कक्षा के बच्चे के साथ हो रही बातचीत को देखें :

'आ' और 'ग' को मिलाओ न... दोनों तो पढ़ लिए तुमने, अब मिलाकर ही तो बोलना है...

बच्चे ने दोनों अक्षर एकदम सही पहचाने, फिर भी वह जोड़कर नहीं बोल पा रहा था। इसका उत्तर यह हो सकता है कि उस प्रक्रिया के दौरान बच्चा इन अक्षरों को जोड़कर अपने लिए कोई सार्थक शब्द नहीं बना पा रहा था। थोड़ी देर बाद, इस बच्चे को जब छोटी-सी मदद दी गई कि इनको जोड़ने से एक ऐसी

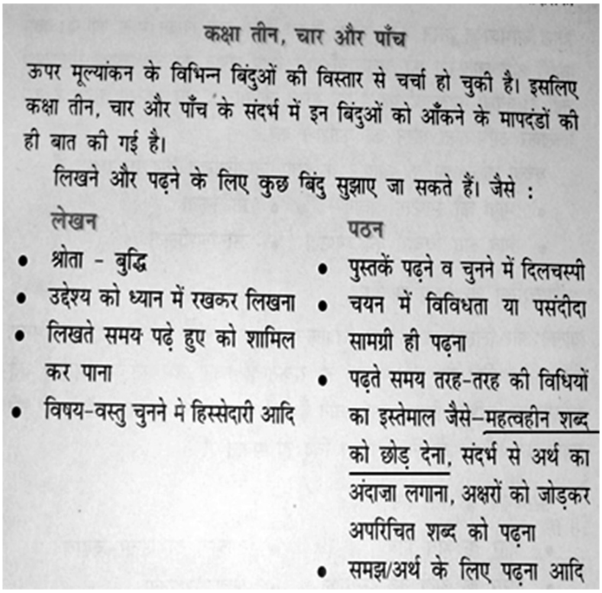
चीज़ का नाम बनता है जो गर्म होती है तो बच्चा तुरन्त बोलता है, 'आग'।

प्राथमिक कक्षाओं के अवलोकनों में मैंने यह भी पाया कि जो बच्चे थोड़ा पढ़ना सीख लेते हैं, माने वे अक्षरों और मात्राओं को काफ़ी हद तक पहचान लेते हैं और शब्दों व वाक्यों के अर्थ भी समझने लगते हैं, ऐसे बच्चे भी पढ़ते वक़्त कई शब्दों को बदल देते हैं या नहीं पढ़ते हैं और छोड़ देते हैं। जैसे– 'पूँछ' को 'पूँच', 'मानी' को 'पानी', 'तार' को 'टार'। इसके बावजूद, बच्चे अर्थ समझ जाते हैं क्योंकि वे पहले पढ़े गए और आगे आने वाले वाक्यों को देखकर अनुमान लगाने लगते हैं। कई बार ऐसा होने पर मैंने बच्चों से पूछा, "क्या यह मानी है?" वे कहते हैं, "नहीं, मैंने पानी ही समझा लेकिन पढ़ने में मानी बोल गया।" मैंने पाया कि वयस्क पाठक भी ऐसा करते हैं, लेकिन क्योंकि वे अकसर मौन वाचन करते हैं तो वे इसे ख़ुद ही ठीक कर लेते हैं।

इसी से सम्बन्धित एक बिन्दु मैं कक्षा 2 की शिक्षिका से साझा कर रही थी। उस समय हमने बच्चों को *बरखा* की किताबें पढ़ने के लिए दी हुई थीं। एक बच्ची ने किताब में एक शब्द पर उँगली रखी और पूछा, "यह क्या लिखा है?" मैडम ने बच्ची को बता दिया और वह अपने स्थान पर चली गई। मैंने मैडम से पूछा, "क्या यह बच्ची, जो किताब वह लेकर आई थी उसे पूरा पढ़ पा रही होगी, क्योंकि उसने केवल एक शब्द पूछा कि यह क्या लिखा है?" उसने मैडम से पूरी कहानी पढ़कर बताने के लिए नहीं कहा। मैडम ने कहा, "नहीं, यह बच्ची उस किताब में और भी बहुत-से शब्द नहीं पढ़ पा रही होगी।" फिर सवाल उठता है कि उस बच्ची ने एक वही शब्द क्यों पूछा कि क्या लिखा है?

शायद इसका जवाब यह हो सकता है कि किसी लिखी हुई बात या कहानी को समझने में हर शब्द एक बराबर ज़रूरी नहीं होता। यह बात एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित शिक्षक सन्दर्शिका *कैसे पढ़ाएँ रिमझिम* में भी पढ़ने को मिलती है।

बच्चों को पढ़ते-पढ़ते पता चल जाता है कि उनके लिए कौन-सा शब्द महत्त्वपूर्ण है और



कक्षा तीन, चार और पाँच

ऊपर मूल्यांकन के विभिन्न बिंदुओं की विस्तार से चर्चा हो चुकी है। इसलिए कक्षा तीन, चार और पाँच के संदर्भ में इन बिंदुओं को आँकने के मापदंडों की ही बात की गई है।

लिखने और पढ़ने के लिए कुछ बिंदु सुझाए जा सकते हैं। जैसे :

लेखन

- श्रोता - बुद्धि
- उद्देश्य को ध्यान में रखकर लिखना
- लिखते समय पढ़े हुए को शामिल कर पाना
- विषय-वस्तु चुनने मे हिस्सेदारी आदि

पठन

- पुस्तकें पढ़ने व चुनने में दिलचस्पी
- चयन में विविधता या पसंदीदा सामग्री ही पढ़ना
- पढ़ते समय तरह-तरह की विधियों का इस्तेमाल जैसे–महत्वहीन शब्द को छोड़ देना, संदर्भ से अर्थ का अंदाज़ा लगाना, अक्षरों को जोड़कर अपरिचित शब्द को पढ़ना
- समझ/अर्थ के लिए पढ़ना आदि

चित्र 1

इस वजह से वे वही शब्द पूछते हैं। जब हम पढ़ रहे होते हैं तो हम अर्थ पर निगरानी रखते हुए पढ़ते हैं। जैसे– यदि कोई बात हमें तार्किक नहीं लगती तो हम उसे फिर से पढ़ते हैं। बच्चे भी इसी प्रक्रिया के द्वारा यह पता लगा लेते हैं कि कौन-से शब्द अर्थ के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। पर यह सब तभी होता है जब बच्चों को किताबों से जूझने के मौक़े दिए जाएँ और उनसे ढेर सारी बातें की जाएँ।

आइए, मैं अपनी बात को कुछ और उदाहरणों के साथ रखने का प्रयास करती हूँ।

उदाहरण 1

कक्षा 3 में 'प्रतिभा पर्व' के प्रश्नपत्र में यह प्रश्न पूछा गया था : "अपने घर के कार्यों का अवलोकन करिए व कामों की सूची बनाइए।"

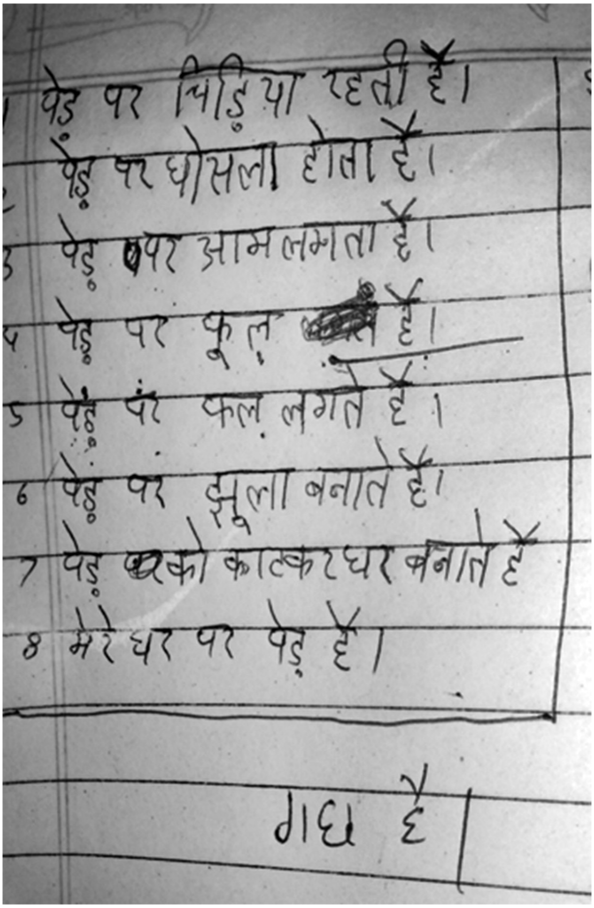
एक बच्चा मेरे पास आया और पूछने लगा, “मैडम, इस प्रश्न में क्या करना है?” मैंने उससे पूछा, “क्या उसे सूची का अर्थ पता है?” वह बोला, “हाँ।” मैंने उससे कहा कि वह अपनी जगह पर जाकर दोबारा उस निर्देश को पढ़े। थोड़ी देर बाद जब मैं उसके पास गई, उसने घर में होने वाले कामों की सूची लिख ली थी। अब ज़रा सोचें, इस वाक्य में कौन-से शब्द अर्थ बनाने के लिए बहुत ज़रूरी हैं– घर, काम, सूची। कोई बच्चा यदि इन तीन शब्दों को पढ़ लेता है तो वह अपने मन से इन तीनों को जोड़कर सही अर्थ तक पहुँच जाएगा।

उदाहरण 2

कक्षा 2 में मैंने बच्चों से पेड़ विषय पर बहुत-सी बातें कीं, फिर बच्चों के बोले हुए कुछ वाक्य बोर्ड पर लिख दिए। इसके बाद एक-एक बच्चे को बुलाकर लकड़ी से पॉइंट करते हुए पढ़वाया।

एक बच्ची 7 वाक्यों में पेड़ को पेड़ पढ़ती रही, लेकिन अन्तिम वाक्य में उसने पढ़ा, “मेरे घर पर गछ है” (छत्तीसगढ़ी में ‘पेड़’ को ‘गछ’ कहते हैं)। मुझे भी एहसास हुआ कि मुझे पेड़ की बजाय ‘गछ’ शब्द ही बोर्ड पर लिखना चाहिए था, क्योंकि बच्चों को पेड़ पढ़ने के कारण अर्थ निर्माण में परेशानी महसूस हो रही होगी।

एक दूसरी बच्ची ने 7वें वाक्य को इस प्रकार पढ़ा, “पेड़ से लकड़ी को काटकर घर बनाते हैं।” ऊपरी तौर पर देखने से लग सकता है कि बच्ची को वाक्य याद है। वह असल में पढ़ नहीं रही है बल्कि उसे याद है। परन्तु फिर यह सवाल होगा कि यह वाक्य उसने 7वें नम्बर पर ही क्यों पढ़ा? इसका एक उत्तर यह हो सकता है कि बच्ची इस पूरे वाक्य में किसी शब्द या शब्दों को सटीकता से पढ़ सकती है, जिस वजह से उसने वाक्य को थोड़ा बदलाव के साथ पढ़ा।

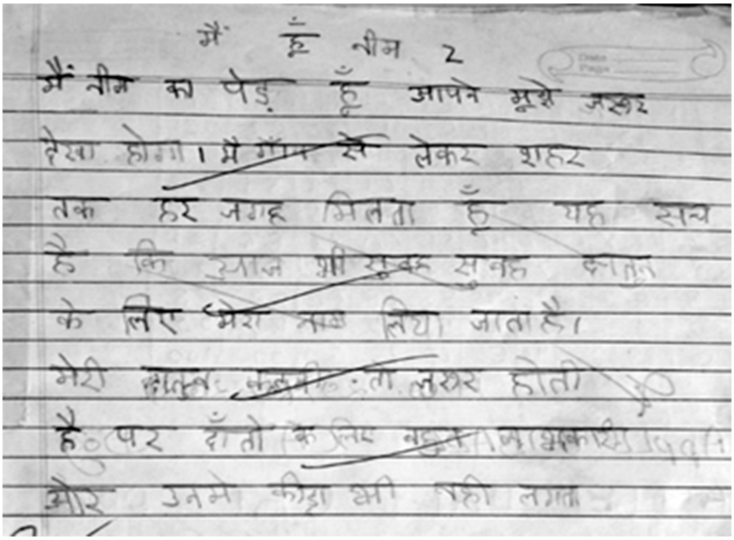


चित्र 2

उदाहरण 3

एक बच्ची किताब से देखकर स्वयं का लिखा हुआ एक पाठ ‘मैं हूँ नीम’ पढ़ रही थी। टेक्स्ट के लिए देखें पेज़ 30 पर चित्र 3।

मैंने बच्ची से पूरा अनुच्छेद पढ़ने के बाद पूछा कि उसने क्या पढ़ा। उसने बताया, “शहर में नीम को बेचते हैं। नीम से दाँत में कीड़ा नहीं लगता।” आप सोच रहे होंगे कि शहर में नीम को बेचने की बात तो लिखी ही नहीं है। मेरे अनुमान से लेख की इस पंक्ति, “मैं गाँव से शहर तक हर जगह मिलता हूँ”, से उसने यह अर्थ निकाला है। इसमें निश्चित ही बच्ची ने अपने पढ़े हुए को अनुभव से जोड़कर एक सार्थक विचार लाने की कोशिश की है।



चित्र 3

तो वह बोला, "राजू नदी में डूब रहा था, दादाजी ने उसे बचा लिया।" मैंने बच्चे से दोबारा पढ़ने के लिए कहा। वह "हाथ पैर मारने लगा" में 'मारने' पर रुक गया और पूछने लगा, "मैडम, यह क्या लिखा है?" मैंने कहा, "मारने", और फिर पूरा वाक्य पढ़ा : "वह पानी में हाथ पैर मारने लगा।" इसके आगे बच्चे को पूरी कहानी पढ़ने दी। अबकी बार उससे पूछा, "बताओ, क्या पढ़ा?"

उदाहरण 4

इसी तरह एक बच्चा 'दादाजी और राजू' कहानी पढ़ रहा था। उस बच्चे ने एक पंक्ति, "हाथ पैर मारने लगा", में 'मारने' को 'मरने' पढ़ लिया। उस बच्चे से पूछा, "क्या पढ़ा?" वह बोला, "मैडम, दादाजी राजू को तैरना सिखा रहे हैं।" मैंने पूछा, "क्या राजू तैरना सीख गया?" वह बोला, "हाँ, वह तैरना सीख गया।"

दादा जी और राजू रोज नदी की तरफ जाते थे। एक दिन दादा जी नदी में तैर रहे थे। राजू किनारे पर बैठा था। उसको भी तैरने का मन हुआ। वह नदी में उतर गया। वह पानी में हाथ पैर मारने लगा। दादा जी उसे तैरना सिखाने लगे। राजू को बहुत मजा आया। अब वह रोज तैरने जाता है। कुछ ही दिनों में उसने तैरना सीख लिया।

चित्र 4

उदाहरण 5

दूसरे बच्चे ने 'नदी' को 'नींद' पढ़ लिया। जब इस बच्चे से पूछा, "क्या पढ़ा बताओ?" वह बोला, "राजू को नींद आ गई। वह सपने में दादाजी से तैरना सीख रहा था।"

बेहतर पढ़ पाने वाले बच्चों के अनुभव

इस कहानी को पढ़ने के दौरान बहुत-से बच्चे, जो बेहतर पढ़ लेते हैं, उनके पढ़ने में एक और बात देखने को मिली। "वह नदी में हाथ पैर मारने लगा।" इस वाक्य को पढ़ने के दौरान बहुत-से बच्चों की पढ़ने की रफ़्तार में कमी देखने को मिली। यह शायद इसी बात को इंगित करता है कि बच्चे इस वाक्य का अर्थ नहीं समझ पा रहे थे। एक बच्ची जिसने काफ़ी प्रवाह और हाव-भाव से यह कहानी पढ़ी, उससे मैंने कहानी में 'हाथ पैर मारना' लिखा हुआ पॉइंट करते हुए पूछा, "इसका मतलब क्या होता है?" उसने कहा, "हाथ पैर धोना।" यह मुझे काफ़ी अजीब

बात लगी। मैंने सोचा, यदि इसे ख़ुद तैरना आता होगा तो उससे मैं उसे 'हाथ पैर मारना' के अर्थ तक ले जा पाऊँगी। उस बच्ची से मैंने पूछा, "तुम्हें तैरना आता है।" वह बोली, "नहीं।" हालाँकि, इस बच्ची ने कहानी में क्या हुआ, यह ठीक से बताया।

मैंने यह काम दो स्कूलों में किया। एक वह जहाँ शिक्षिका बच्चों से बहुत बातचीत करती हैं (ब) और दूसरा, जहाँ पर कम बातचीत होती है (अ)। 'हाथ पैर मारना', इस मुहावरे का अर्थ जब (अ) स्कूल में पूछा तो सिर्फ़ एक ही बच्चा थोड़ा सही उत्तर दे पाया, काफ़ी बच्चे तो चुप ही रहे। वहीं (ब) स्कूल में अलग-अलग उत्तर आए जो लगभग सभी सही थे। मसलन, 'पानी उछालने लगा', 'डूबने से बचने के लिए', 'हाथ पैर मारने से तैरने लगते हैं', 'तैरने की कोशिश कर रहा था', आदि।

उदाहरणों पर मेरे विचार

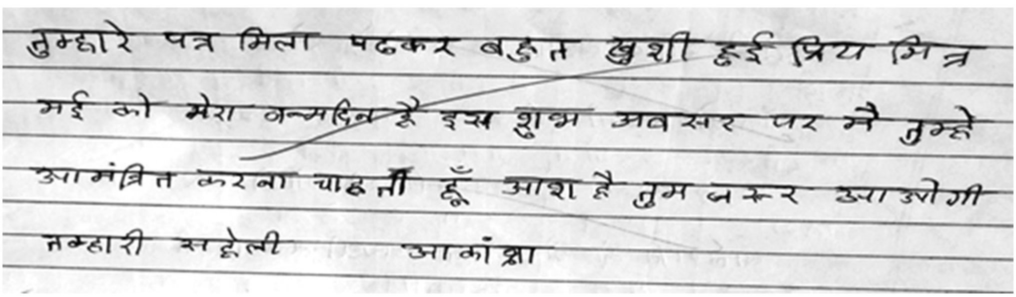
इन उदाहरणों से आप इस बात का अन्दाज़ा लगा पा रहे होंगे कि किसी अनुच्छेद में कौन-से शब्द अर्थ निर्माण के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण होते हैं और उन शब्दों की मदद से पूरा अर्थ बनाने का 'गैप' कैसे पूरा होता है। मसलन, हर शब्द एक अवधारणा होता है। जब बच्चे ने 'नदी' को 'नींद' पढ़ा तब उसने नींद से 'सपना' शब्द जोड़ा और एक सार्थक कहानी बना ली। इसी तरह, 'मारना' को 'मरना' और 'नदी' के साथ 'डूबने' को जोड़कर एक सार्थक कहानी की रचना कर ली।

इन सभी उदाहरणों में बच्चे अर्थ बनाने की प्रक्रिया सीख रहे हैं। वे इस बात से रूबरू हो रहे हैं कि लिखे हुए का अर्थ होता है। बेशक, अनुमान में कुछ ग़लतियाँ हुई हैं जिनपर काम ज़रूरी है। अब ज़रा सोचिए, उसे डाँटकर बोला गया होता कि देखकर पढ़ो, 'मरना' नहीं 'मारना' लिखा है तो इसके क्या नतीजे होते?

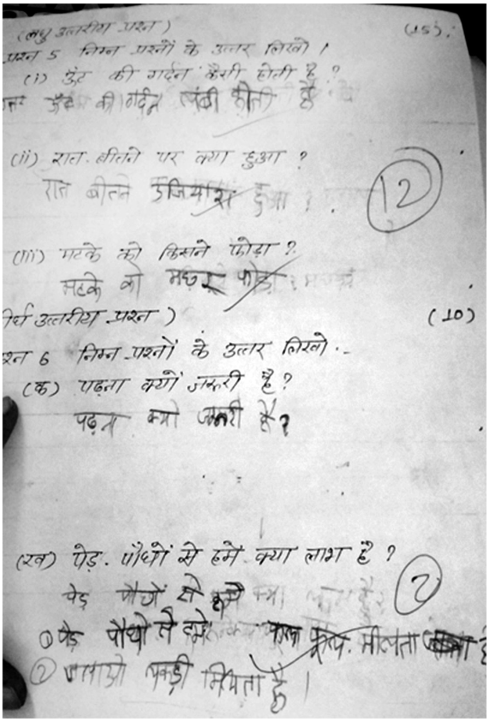
1. बच्चे का ध्यान अर्थ बनाने से हटकर एकदम सटीकता से अक्षर पहचानने पर चला जाता।
2. बच्चा अपनी ग़लती पहचानना नहीं सीख पाता।
3. पढ़ने में डर का एहसास होता, बजाय पढ़ लेने की ख़ुशी के।

पढ़ना सिखाना

पढ़ना सिखाने की प्रक्रिया में अवलोकन बेहद महत्त्वपूर्ण कौशल होता है। जैसा कि आपने उदाहरणों से देखा कि पढ़ने में भाषा, अनुमान और पूर्व-ज्ञान (शब्दों की अवधारणा) किस तरह दिखाई देते हैं। आपको बच्चे के पढ़ने से ही इस बात का एहसास हो जाना चाहिए कि वह समझकर पढ़ रहा है अथवा नहीं। कक्षा 5 की एक बच्ची नीचे उसके द्वारा लिखा हुआ आमंत्रण पत्र पढ़ रही थी। पढ़ने में उसने एक महत्त्वपूर्ण शब्द 'मई' को 'भाई' पढ़ दिया। बच्ची से जब मैंने पूछा कि उसने क्या पढ़ा, तो वह कुछ नहीं बोली। उस बच्ची के पढ़ने के तरीक़े से मेरा अनुमान था कि जब वह इस पत्र को दोबारा पढ़ेगी तो अपनी ग़लती सुधार लेगी। और हुआ भी यही। दोबारा पढ़ने


तुम्हारे पत्र मिला पढकर बहुत खुशी हुई प्रिय मित्र
मई को मेरा जन्मदिन है इस शुभ अवसर पर मै तुम्हे
आमंत्रित करना चाहती हूँ आश है तुम जरूर आओगी
तुम्हारी सहेली आकांक्षा

चित्र 5



चित्र 6

पर उसने 'मई' पढ़ा। इसके बाद मैंने फिर पूछा कि क्या पढ़ा, तो वह चुपचाप खड़ी रही। हम काफ़ी हद तक यह कह सकते हैं कि बच्ची समझ के साथ पढ़ रही थी वरना वो अपनी ग़लती ख़ुद से नहीं सुधार पाती।

एक और बच्ची ने 'राजू और दादाजी' कहानी पढ़ी। उसके पढ़ने के आधार पर मैंने अनुमान लगाया था कि इस बच्ची को यह कहानी समझ आ रही है, लेकिन जब यह बच्ची अपनी पाठ्यपुस्तक का कोई पाठ पढ़ेगी तो नहीं समझ पाएगी। अपना अनुमान जाँचने के लिए मैंने कहानी से सम्बन्धित कुछ सवाल पूछे, जिनके उत्तर वह दे पाई। अब दूसरा अनुमान पाठ्यपुस्तक के विषय में था। मैंने उस बच्ची से कहा, "तुम अपनी कक्षा की किताब से अपनी पसन्द का कोई पाठ पढ़ो और मुझे पाठ के बारे में कुछ बताना, जितना भी तुम्हें समझ आए।" वह 'ईदगाह' कहानी के दूसरे पन्ने से कहानी पढ़ने लगी। कुछ देर देखने के बाद मैंने पूछा, "आप कहानी शुरू से क्यों नहीं पढ़ रही हो?" वह बोली, "पहला पन्ना मैंने कल घर में पढ़ लिया था।" मैंने पूछा, "क्या लिखा है पहले पन्ने में?" वह बोली, "मुझे नहीं पता।"

यहाँ आप देख सकते हैं कि बच्ची पहले पन्ने से आगे पढ़े हुए को जोड़ने के बारे में सोच ही नहीं रही है। इसी सन्दर्भ में तीसरे और चौथे उदाहरण बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं, जहाँ बच्चे मुख्य शब्द पहचान रहे हैं और उन्हें पिरोकर एक सार्थक कहानी बनाने की कोशिश कर रहे हैं (नींद-सपना, मरना-दादाजी द्वारा बचाना)।

हमें यह बात बहुत अच्छे-से ध्यान रखनी चाहिए कि पढ़ने के साथ ही हम बच्चों को 'सोचना' सिखा रहे हैं। सोचना, अपना मत बनाने, सही-ग़लत की पहचान करने और नया कुछ सीखने के लिए। यह काम बहुत पेचीदा है। हमें अपने-आप को पूरे समय देखने की ज़रूरत होती है। यह एहसास मुझे कुछ महीनों पहले अपने एक विद्यार्थी के टेस्ट पेपर को देखकर हुआ। आज भी जब मैं इसे देखती हूँ तो उतनी ही गम्भीरता महसूस करती हूँ, क्योंकि मेरी इस विद्यार्थी ने, 'पढ़ना क्यों ज़रूरी है?', प्रश्न के उत्तर में प्रश्न ही उतार दिया (देखें चित्र 6)। हालाँकि, बाक़ी प्रश्नों के उत्तर उसने सही लिखे क्योंकि वे सब पाठ्यपुस्तक से थे। बच्ची का यह उत्तर देखकर मुझे लगा कि मैंने पढ़ना सिखाने की प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण चरण छोड़ दिया है।

मीनू पालीवाल ने अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में 6 वर्ष काम किया है। आप फ़ेलोशिप प्रोग्राम के ज़रिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़ीं। इससे पहले उन्होंने 6 वर्ष आईसीआईसीआई बैंक में काम किया। वे अपने मन में आने वाले सवालों की तलाश में शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ीं। उन्हें प्राथमिक कक्षाओं में काम करना अच्छा लगता है।

सम्पर्क : paliwal.meenu@gmail.com